गाँधी वैचारिकी
के विविध आयाम

नमूना • SAMPLE

SAMPLE

गाँधी वैचारिकी के विविध आयाम

प्रधान संपादक

डॉ0 निशा सिंह

प्राचार्या, मॉडर्न कॉलेज ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज,
मोहन नगर, गाजियाबाद।

संपादक

डॉ0 धीरज सिंह

विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग,
मॉडर्न कॉलेज ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज, मोहन नगर, गाजियाबाद।

अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस
दिल्ली (भारत)

नमूना • SAMPLE

द्वारा प्रकाशित

अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस

Publisher, Distributor, Exporter having an Online Bookstore

एल–9ए, प्रथम तल, गली न0 42,
सादतपुर एक्सटेंसन, दिल्ली–110094 (भारत)
Phone : 9968628081, 9555149955, 9013387535
E-mail : akhandpublishinghouse@gmail.com
akhandpublishing@yahoo.com
Website : www.akhandbooks.com

गाँधी वैचारिकी के विविध आयाम

संस्करण : 2020
© सम्पादक
ISBN: 978-81-947936-3-2

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी हिस्से को प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इलेक्ट्रॉनिक या किसी अन्य माध्यम द्वारा पुनः प्राप्ति समेत किसी भी रूप में प्रतिलिपिकृत, अनुवादित, संगृहीत नहीं किया जा सकता है और न ही किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम द्वारा इसे प्रसारित किया जा सकता है।

इस पुस्तक में लेखक द्वारा व्यक्त विचार उनके व्यक्तिगत हैं जिसका प्रकाशक एवं सम्पादक से कोई संबंध नहीं है।

भारत में प्रकाशित

झपसू यादव द्वारा 'अखण्ड पब्लिशिंग हाउस' के लिए प्रकाशित। वी.एम. ग्राफिक, दिल्ली द्वारा कवर डिजाइन व शब्द संयोजन तथा आरना इंटरप्राइजेज, दिल्ली से मुद्रित।

SAMPLE

सम्पादकीय

कोई व्यक्ति जन्मना महान नहीं होता उसका कृतित्व ही उसे महान बनाता है। भारतीय राजनैतिक क्षितिज के दैदीप्यमान नक्षत्र महात्मा गाँधी भी ऐसे ही महापुरुष थे जिनके कृतित्व ने उन्हें मोहनदास करमचंद गाँधी के साधारण व्यक्तित्व से मुक्त कर उन्हें महात्मा गाँधी बना दिया। वे एक ऐसे साधारण मानव थे जिनके कृतित्व ने उन्हें महामानव, महासंत, राष्ट्र नायक, जननायक और विश्व नायक की श्रेणी में खड़ा कर दिया और उनके सामान्य व्यक्तित्व को असाधारण, अद्‌भुत और अविस्मरणीय बना दिया। महात्मा गाँधी भारतीय राजनीति के एक ऐसे पुरोधा हैं जिनको युगों–युगों तक याद किया जाता रहेगा।

2 अक्टूबर 1869 को पोरबंदर में जन्मे महात्मा गाँधी ने भारतीय राजनीति में लोकमान्य बाल गंगाधर के निधन के पश्चात उपजे शून्य को पूरित किया। भारतीय राजनीति में उनके प्रभाव को केवल इस बात से समझा जा सकता है कि भारतीय राजनीति का वह काल खंड जो महात्मा गांधीजी के भारतीय राजनीति में प्रवेश के साथ प्रारम्भ होता है और उनके निधन पर समाप्त होता है, उसे गाँधी युग के नाम से जाना जाता है।

गांधीजी देश और काल की सीमाओं से परे हैं। वे मात्र भारतवर्ष के ही नहीं, वरन सम्पूर्ण विश्व की थाती हैं। उनके विचार उनके समय में जितने प्रासंगिक थे उतने ही प्रासंगिक आज भी हैं। उनकी वैचारिक विरासत विश्व के लिए एक धरोहर है।

गांधीजी की 150 वीं जयंती के उपलक्ष्य में ''गाँधी वैचारिकी के विविध आयाम'' नामक शीर्षक से इस पुस्तक को सम्पादित किया गया है। इस पुस्तक में हमारा कुछ भी नहीं है। इस पुस्तक में कुल 49 लेखों को संकलित किया गया है, जो गांधीजी के विविध वैचारिक आयामों पर आधारित हैं। अपने आलेख के माध्यम से सहयोग देने के लिए सही लेखकों को धन्यवाद और आभार। विभिन्न लेखकों के गांधीजी के विषय में अभिव्यक्त इन विचारों को पुस्तकाकार रूप देने के लिए अखंड पब्लिशिंग हाउस का भी धन्यवाद एवं आभार।

SAMPLE

इस पुस्तक के माध्यम से उनके विचारों को पुनः वर्तमान वैश्विक सन्दर्भ में देखने का प्रयास किया गया है। निश्चित रूप से यह पुस्तक महात्मा गांधीजी के विचारों के अध्येताओं और शोधार्थियों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

संपादक
डॉ0 धीरज सिंह
विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग,
मॉडर्न कॉलेज ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज,
मोहन नगर, गाजियाबाद।

प्रधान संपादक
डॉ0 निशा सिंह
प्राचार्या,
मॉडर्न कॉलेज ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज,
मोहन नगर, गाजियाबाद।

नमूना • SAMPLE

सहायक सूची

1. डॉ0 निशा सिंह, प्राचार्या, मॉडर्न कॉलेज ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज, मोहन नगर, गाजियाबाद।
2. डॉ0 धीरज सिंह, विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग, मॉडर्न कॉलेज ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज, मोहन नगर, गजियाबाद, उत्तर प्रदेश।
3. डॉ० सुषमा सिंह, प्राक्तन प्राचार्य आर०बी०एस०कॉलेज, आगरा।
4. डॉ० गीता शर्मा, एसोसिएट प्रोफेसर एम.एम.एच कॉलेज, गाजियाबाद।
5. डॉ. हेमलता सुमन, एसोसिएट प्रोफेसर हिन्दी विभाग, नारायण कॉलेज शिकोहाबाद–283125, फीरोजाबाद–उत्तर प्रदेश।
6. डॉ. अरूणा शर्मा, एच.आई.सी.टी.कॉलेज ग्वालियर
7. डॉ. गीता रानी, एच.ओ.डी., एजुकेशन डिपार्टमेंट, मेवाड़ इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, गाज़ियाबाद।
8. डॉ. कनक रानी, मॉडर्न कॉलेज ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज, मोहन नगर, गाजियाबाद।
9. डॉ. मंजुलता कश्यप सहायक प्राध्यापक (अर्थशास्त्र), ठाकुर छेदीलाल शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय जांजगीर, जिला – जांजगीर चाम्पा (छ.ग.)
10. डॉ. सतीश कुमार वर्मा, सहायक प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान विभाग, सरिया कॉलेज सरिया, गिरिडीह, झारखंड।
11. डॉ० ममता भारद्वाज, सहायक प्राध्यापक, शिक्षाशास्त्र विभाग, देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार।
12. आरती शर्मा, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, आर0जी0 (पी0जी0) कॉलिज, मेरठ
13. डॉ0 सुन्दरीबाला शर्मा, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, आर0जी0 (पी0जी0) कॉलिज, मेरठ।
14. डॉ. शैली जैन, व्याख्याता (अंग्रेजी), एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालय, शाहपुर, बैतूल (म. प्र.)।

NCTE SAMPLE

15. डॉ. मनीषा सिंह, असिस्टेंट प्रोफेसर, मॉडर्न कॉलेज ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज, मोहन नगर, गाजियाबाद।
16. डॉ. रचना पाण्डेय, स्वामी श्री स्वरुपानंद, सरस्वती महाविद्यालय, भिलाई (छ.ग.)
17. डॉ. अनिल प्रकाश श्रीवास्तव, सहायक प्राध्यापक, आईईएस कॉलेज ऑफ एजुकेशन भोपाल।
18. डॉ. प्रमोद कुमार मदेशिया, असिस्टेंट प्रोफेसर, स्कूल ऑफ एजुकेशन, शारदा यूनिवर्सिटी, गौतम बुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश।
19. डॉ० अंकुर चौहान, सहायक प्राचार्य, डॉ० शादी लाल कॉलेज ऑफ एजुकेशन, मेरठ
20. हरीतिमा दीक्षित, असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, मॉडर्न कॉलेज ऑफ प्रोफेशनल स्टडीस, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश।
21. सोनिया वर्मा त्रिखा, असिस्टेंट प्रोफेसर, बी.एड विभाग, स्यादवाद इंस्टिट्यूट ऑफ हाईयर एजुकेशन एंड रिसर्च, बागपत, उत्तर प्रदेश।
22. श्री रविकांत वर्मा, सहायक प्रोफेसर, मॉडर्न कॉलेज ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज, मोहन नगर, गाजियाबाद।
23. पियूष कुमार, हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग जम्मू केंद्रीय विश्वविद्यालय, जम्मू।
24. कोमल तूनवाल, शोधार्थी (सीनियर रिसर्च फैलो), अहिंसा एवं शांति विभाग, जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं–341306 (राजस्थान)
25. अंजु अरोरा, शोधार्थी, चौधरी चरण विश्वविद्यालय (मेरठ)।
26. अभय कुमार, शोध छात्र, दर्शन विभाग, डॉ. हरी सिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.) 470003
27. कामिनी व्यास रावल, व्याख्याता, पी॰ एचडी स्कॉलर एजुकेशन, मोहनलाल सुखाड़िया वि॰वि॰ उदयपुर (राजस्थान)।
28. रवीश कुमार, रिसर्च स्कॉलर (पीएचडी एजुकेशन), आईएएसई डीम्ड यूनिवर्सिटी, सरदारशहर, चूरू (राजस्थान)।
29. संदिप जगन्नाथ वारूळे, संशोधक छात्र, क.ब.चौ., उत्तर महाराष्ट्र विद्यापीठ, जलगाव (महाराष्ट्र)।
30. डॉ. अजिता सिंह तिवारी, सहायक प्राध्यापक, एम.एड. विभाग, बरेली कॉलेज, बरेली।
31. शरद गंगवार, पूर्व छात्र (एम.एड.), बरेली कॉलेज, बरेली।
32. शिवानी भौमिक, रिसर्च स्कॉलर, नेहरू ग्राम भारती विश्वविद्यालय, प्रयागराज।

नमूना SAMPLE

33. सन्दीप कुमार कुशवाहा, एम0 एड0 विद्यार्थी, मॉडर्न कॉलेज ऑफ प्रोफेशनल स्ट्डीज, मोहन नगर, गाजियाबाद।

34. कविता मान, एम०एड०विद्यार्थी, भगत फूल सिंह महिला विश्वविद्यालय खानपुर कलां सोनीपत हरियाणा।

35. संजय, एम एड–छात्रा, महालक्ष्मी कॉलेज फॉर गर्ल्स, दुहाई, गाजियाबाद।

36. Dr. Subodh Bala Gupta, Professor, Department of Education, Modern College Of Professional Studies, Ghaziabad

37. Prof. Shrawan Pandey, Department of Management, Bhilai Institute of Technology, Durg,(CG)

38. Dr. Subhashini Sharma, Associate Professor, department of Chemistry, MMH College, Ghaziabad, Uttar Pradesh, India.

39. Dr. Gunjan Sharma, Assistant Professor, Subharti College Of Journalism And Mass Communication, Swami Vivekanand Subharti University, Meerut.

40. Dr. Jaya Choudhary, Assistant Professor, Department of Philosophy, G.B.M College, Gaya.

41. Dr. Preeti Sharma, Assistant Professor, Kamal Institute of Higher Education, and Advance Technology(GGSIPU).

42. Dr. Reena Devi, Assistant Professor, Hindu College of Education, Sonepat.

43. Ms. Suman Lata, Assistant Professor, Hindu College of Education, Sonepat.

44. Kavta Vishnoi, Faculty of B.El.Ed, Department, Roshan Singh Chauhan SmarkMahavidyalaya, Asmoli, Sambhal, Pin code - 244102

45. Ms. Monika Bansal, Assistant Professor, Modern College of Professional Studies, Mohan Nagar Ghaziabad.

46. MS. Shweta Verma, PGT-English, Shambhu Dayal Global School Ghaziabad.

47. Shipra Sharma, Assistant Professor, Modern College of Professional Studies, Mohan Nagar, Ghaziabad.

48. Abha Gupta, Assistant professor, College of Education, Bilaspur.

49. Asha Sharma, Assistant Professor, Department of Education, M.C.P.S, Mohan Nagar, Ghaziabad.

SAMPLE

50. Mr. Mayank Tomar, Research Scholar (History), Mewar University, Chittorgarh, Rajasthan.
51. Rahul Kumar Seth, Research Scholar (Defence & Strategic Studies), Tilakdhari PG College, Jaunpur, UP.
52. Ashish Pratap Singh, Research Scholar (Law), Jayoti Vidyapeeth Women's University, Jaipur, Rajasthan.

नमूना • SAMPLE

विषय–सूची

	सम्पादकीय	*v*
	सहायक सूची	*vii*
1.	राष्ट्र नायक महात्मा गाँधी – एक अविस्मरणीय व्यक्तित्व *—डॉ0 निशा सिंह*	1
2.	भारत में स्वदेशी आन्दोलन और महात्मा गाँधी *—डॉ0 धीरज सिंह*	8
3.	समसामयिक परिवेश में गांधी जी के विचारों की प्रासंगिकता *—डॉ० सुषमा सिंह*	17
4.	प्रेमचंद की कहानियों में गांधीवादी विचारधारा *—डॉ० गीता शर्मा*	20
5.	वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में महात्मा गाँधी के चिंतन की प्रासंगिकता *—डॉ. हेमलता सुमन*	27
6.	गाँधीजी के सामाजिक एवं शैक्षिक विचारों की उपयोगिता *—डॉ. अरूणा शर्मा*	30
7.	महात्मा गाँधी की शिक्षा नीति *—डॉ. गीता रानी*	35
8.	मोहनदास से महात्मा–पराधीनता से कोरोना तक *—डॉ. कनक रानी*	42
9.	गाँधी जी का शिक्षा दर्शन *—डॉ. (श्रीमती) मंजुलता कश्यप*	46
10.	वर्तमान युवा वर्ग और गांधी दर्शन *—डॉ. सतीश कुमार वर्मा*	54

नमूना SAMPLE

11.	महात्मा गांधी की शिक्षा नीति का वर्तमान में नये प्रयोग *—डॉ० ममता भारद्वाज*	60
12.	महात्मा गाँधी जी की अहिंसावादी विचारधारा *—आरती शर्मा, डॉ0 सुन्दरीबाला शर्मा*	67
13.	बुनियादी शिक्षा–स्वावलम्बन एवं श्रम विभाजन *—डॉ. शैली जैन*	71
14.	21 वीं शताब्दी में सत्याग्रह सत्य के वैश्विक उद्देश्यों के सामाजिक, नैतिक और आध्यात्मिक आयाम *—डॉ. मनीषा सिंह*	76
15.	महात्मा गांधी : आज की सामाजिक स्थिति *—डॉ. रचना पाण्डेय*	84
16.	महात्मा गांधी का शिक्षा दर्शन और उसके निहितार्थ *—डॉ. अनिल प्रकाश श्रीवास्तव*	87
17.	महात्मा गाँधी के शैक्षिक विचारों के हाशिये में वर्तमान शिक्षा व्यवस्था की समीक्षा *—डॉ. प्रमोद कुमार मदेशिया*	93
18.	वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में महात्मा गाँधी के चिंतन की प्रासंगिकता *—डॉ० अंकुर चौहान,*	98
19.	वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में महात्मा गांधी के चिन्तन की प्रासंगिकता *—हरीतिमा दीक्षित*	104
20.	महात्मा गाँधी का कौशल भारत *—सोनिया वर्मा त्रिखा*	110
21.	वैश्वीकरण के युग में महात्मा गाँधी के अहिंसावादी समाज सुधारक, शैक्षिक, धार्मिक और राजनीतिक दार्शनिक सिद्धांतों का व्यापक दृष्टिकोण *—रविकांत वर्मा*	116
22.	प्रेमचंद के पात्रों पर गांधीवादी मूल्यों का प्रभाव *—पियूष कुमार*	125
23.	भारतीय सिनेमा में गांधीवादी दर्शन *—कोमल तूनवाल*	134
24.	महात्मा गांधी की राष्ट्रीय आंदोलन में भूमिका *—अंजु अरोरा*	139

नमूना SAMPLE

25. गाँधी जी और सामाजिक न्याय 145
—*अभय कुमार,*

26. वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में महात्मा गांधी के शिक्षा दर्शन की प्रासंगिकता 151
—*कामिनी व्यास रावल*

27. महात्मा गांधी और शिक्षा में नैतिक मूल्य 155
—*रवीश कुमार*

28. वर्तमान विश्व और महात्मा गांधी 160
—*संदिप जगन्नाथ वारूळे*

29. वर्तमान भारतीय शिक्षा प्रणाली और महात्मा गाँधी का शैक्षिक दर्शन 164
—*डॉ. अजिता सिंह तिवारी, शरद गंगवार*

30. महिला सशक्तिकरण एवं गांधी जी के विचार 171
—*शिवानी भौमिक*

31. महात्मा गांधी की रामराज्य की परिकल्पना 176
—*सन्दीप कुमार कुशवाहा*

32. वैश्वीकरण के दौर में गांधी दर्शन की प्रासंगिकता 183
—*कविता मान*

33. महात्मा गांधी की शिक्षा नीति 189
—*संजय*

34. Mahatma Gandhi's Views on Education 195
—*Dr Subodh Bala Gupta*

35. Gandhian Thoughts: Impact on Present Scenario 204
—*Prof. Shrawan Pandey*

36. Relevance of Gandhi's Ideology in Modern Politics 207
—*Dr. Subhashini Sharma*

37. The Relevance of Mahatma Gandhi's Thought in the Present Global Scenario 209
—*Dr. Gunjan Sharma*

38. Gandhi's Concept of Education 215
—*Dr. Jaya Choudhary*

39. A Role Model in Light of Values: Mahatma Gandhi 220
—*Dr. Preeti Sharma*

40. Mahatma Gandhi's Educational Philosophy in the Context of Modern Education System 228
—*Dr. Reena Devi, Ms. Suman Lata*

SAMPLE

41. Thought of Mahatma Gandhi's Sarvoday (Progress of All) and Rural Development 235
—*Kavta Vishnoi*

42. The Relevance of the Mahatma Gandhi's Thoughts in the Present Global Scenario 242
—*Ms. Monika Bansal*

43. Gandhi Ji & His Education Policies 249
—*Ms. Shweta Verma*

44. Gandhi Ji as An True Environmentalist: In Perspective of Industrialization and Modernity 258
—*Shipra Sharma*

45. Educational Views of Mahatma Gandhi 265
—*Abha Gupta*

46. Mahatma Gandhi as An Educational Reformer 276
—*Asha Sharma*

47. Ideology of Non-Violence of Mahatma Gandhi 285
—*Mr. Mayank Tomar*

48. Mahatma Gandhi: An Unforgettable Contribution for Indian Independence 288
—*Rahul Kumar Seth*

49. The Relevance of Mahatma Gandhi's Thought in The Present Global Scenario 293
—*Ashish Pratap Singh*

SAMPLE

1

राष्ट्र नायक महात्मा गाँधी – एक अविस्मरणीय व्यक्तित्व

डॉ0 निशा सिंह

भूमिका

भारत का इतिहास महानायकों के संघर्ष की अद्‌भुत गाथाओं से भरा हुआ है। समय –समय पर अनेक महान विभूतियों ने यहाँ जन्म लेकर राष्ट्रनायकों की परंपरा को आगे बढ़ाते हुए भारतीय महानायकों की गौरव गाथा के कोष को समृद्ध किया। इन राष्ट्रनायकों ने अपने व्यक्तित्व व कृतित्व से भारतीयों के जीवन दर्शन, जीवन शैली, धर्म, नैतिक मूल्यों, आदर्श, संस्कृति, शैक्षिक, राजनैतिक, सामाजिक सहित प्रत्येक पक्षों को प्रभावित किया। समय–समय पर भारतीय समाज में उत्पन्न होती विकृतियों को भी महापुरुषों ने संशोधित व परिमार्जित करते हुए भारतीय जनमानस के जीवन पद्धति की निर्मलता को बनाए रखा।

राम–कृष्ण की अवतारी परंपरा को यहाँ उत्पन्न होने वाले महापुरुषों ने अपने अवतरण से सदैव ही जीवित रखा। अवतरण की यह अविरल धारा भारत की पावन भूमि पर सदा प्रवाहमान रही है। गौतम बुद्ध, महावीर स्वामी, सम्राट अशोक, गुरु नानक देव, चाणक्य, आदि शंकराचार्य, तुलसी दास, कबीर दास, रहीम दास, राजा राम मोहन राय, दयानन्द सरस्वरती, स्वामी विवेकानंद आदि ऐसे ही महापुरुष हैं जिन्होंने भारतीय समाज में धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक चेतना को पुनर्जागृत करते हुए समाज में व्याप्त जड़ता, रूढ़ता, कुप्रवृत्तियों और कुरीतियों पर करारा प्रहार किया तथा समाज की नवीन

SAMPLE

युगानुकूल पुनर्रचना हेतु कुशल मार्गदर्शन प्रदान किया। भारत के इन महापुरुषों ने अपने देश में ही नहीं, वरन सम्पूर्ण विश्व में अपने कृतित्व से अपनी पहचान स्थापित की।

19वीं सदी के पूर्वार्ध में एक ऐसे ही महापुरुष का भारत में अवतरण होता है जिसने भारत ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया को प्रभावित करते हुए विश्व में फैले साम्राजयवाद की जड़ें हिला दी तथा विश्व की सबसे शक्तिशाली अंग्रेज सत्ता को भारत छोड़ने पर विवश कर दिया। वह महापुरुष थे – मोहन दास करमचंद गांधी। पूरा विश्व जिन्हे महात्मा गाँधी के नाम से जनता है। भारतीय जनमानस उन्हें बापू के नाम से भी सम्बोधित करता था।

महात्मा गाँधी का प्रारम्भिक जीवन

महात्मा गान्धी का जन्म पश्चिमी भारत में स्थित गुजरात प्रान्त के एक तटीय शहर पोरबंदर नामक स्थान में 2 अक्टूबर सन् 1869 को हुआ था। उनके पिता श्री करमचन्द गान्धी ब्रिटिश राज के समय काठियावाड़ की एक छोटी सी रियासत पोरबंदर के दीवान थे। उनकी माता का नाम पुतलीबाई था जो करमचन्द की चौथी पत्नी थी। उनकी पहली तीन पत्नियों का प्रसव के दौरान देहांत हो गया था। पुतलीबाई एक अति धार्मिक प्रवृत्ति की, सीधी–सादी, उदार हृदया, घरेलू महिला थीं। महात्मा गाँधी अपने भाई–बहनो में सबसे छोटे थे।

भक्तिभाव और धार्मिक भाव से ओतप्रोत माता की देखरेख तथा उस क्षेत्र की प्रचलित जैन परम्पराओं ने बालक मोहनदास को बहुत प्रभावित किया। इन सकारात्मक प्रभावों ने आगे चलकर महात्मा गांधी के जीवन में बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। ये प्रभाव थे– सादा जीवन, शाकाहारी भोजन, आत्मशुद्धि के लिये व्रत एवं उपवास, असहायों की सहायता, सत्य के प्रति निष्ठा, दया की भावना, अहिंसा और विभिन्न वर्गों व जातियों के लोगों के बीच समन्वय और सहिष्णुता की भावना। यही वे प्रभाव थे जिसने आगे चल कर एक साधारण से बालक मोहनदास करमचंद गाँधी को महानायक के रूप में बदल कर महात्मा गाँधी बना दिया।

मई 1883 में 13 वर्ष की आयु पूर्ण होने के पश्चात उनका विवाह 14 साल की कस्तूर बाई मकनजी से संपन्न हुआ। यह विवाह उनके माता पिता द्वारा संपन्न किया गया एक व्यवस्थित बाल विवाह था जो उन दिनों उस क्षेत्र में प्रचलित था।

शिक्षा–दीक्षा

महात्मा गाँधी ने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा राजकोट में पूर्ण की। उन्होंने पोरबंदर से मिडिल और राजकोट से हाई स्कूल की परीक्षा सन् 1887 में उत्तीर्ण की। दोनों परीक्षाओं में शैक्षणिक स्तर पर वह एक औसत छात्र रहे। मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात गांधीजी ने भावनगर के सामलदास कॉलेज में आगे की पढ़ाई के लिए प्रवेश ले लिया, किन्तु परिवारवालों की इच्छा पर उन्हें अपनी शेष पढ़ाई पूरी करने के लिए इंग्लैण्ड जाना पड़ा। अपने 19वें जन्मदिन से लगभग एक माह पूर्व ही 4 सितम्बर 1888 को महात्मा गांधीजी

यूनिवर्सिटी कॉलेज लन्दन में कानून की पढाई करने के लिये इंग्लैंड रवाना हो गये। ब्रिटेन में अपनी पढ़ाई के दौरान उन्होंने अपने पारिवारिक संस्कारों को नहीं छोड़ा। वहां वे शाकाहारी भोजन ही लिए करते थे।

इंग्लैण्ड में रहकर उन्होंने अपनी वकालत की पढ़ाई पूरी की और बैरिस्टर की उपाधि प्राप्त की। सन् 1891 में महात्मा गाँधी अपनी वकालत की पढ़ाई पूरी कर बैरिस्टर बनकर भारत लौटे। भारत में वापस आने के बाद उन्होंने वकालत प्रारम्भ की लेकिन सफल नहीं हुए।

वकालत और साउथ अफ्रीका प्रवास

कुछ समय पश्चात गांधीजी को साउथ अफ्रीका, जो उस समय ब्रिटिश सरकार के अधीन था, में लीगल सर्विस का एक साल का कॉन्ट्रैक्ट मिला। और उन्हें इस कारण अप्रैल 1893 में वो साउथ अफ्रीकन स्टेट ऑफ नेटल के डरबन के लिए दादा अब्दुल्ला एण्ड अब्दुल्ला नामक मुस्लिम व्यापारिक संस्था के मुकदमे के सिलसिले में रवाना हो गए। दक्षिण अफ्रीका इस समय ब्रिटिश हुकूमत का एक भाग हुआ करता था।

7 जून 1893 को एक ट्रेन यात्रा के दौरान उनके जीवन में एक घटना घटी जिसने उनके जीवन की दिशा और दशा बदलकर रख दी। वे प्रेटोरिया जा रहे थे, तभी एक अंग्रेज ने उनके प्रथम श्रेणी रेलवे कोच में बैठने पर आपत्ति की, जबकि उनके पास इस कोच के उनके पास वैध टिकट था। उन्होंने ट्रेन से उतरने से इंकार कर दिया। उन्हें इस कारण पिटरमार्टिजबर्ग स्टेशन पर ट्रेन से बाहर फैंक दिया गया। इस अपमान ने उन्हें अंदर तक झकझोर कर रख दिया और उन्होंने स्वयं को इस रंगभेद के विरुद्ध लड़ने के लिए तैयार किया।

दक्षिण अफ्रीका के कई होटलों में उनके लिए प्रवेश वर्जित कर दिया गया था। ऐसी ही अनेक घटनाओं में से एक घटना थी जिसमें अदालत के न्यायाधीश ने उन्हें अपनी पगड़ी उतारने का आदेश दिया था जिसे उन्होंने स्वीकार नहीं किया। इस प्रकार दक्षिण अफ्रीका प्रवास के दौरान अनेकों ऐसी घटनाएं घटी जिसके कारण उनके जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन हुए और तत्कालीन समाज में व्याप्त शोषण, अन्याय और भेदभाव के प्रति जागरुकता का कारण बनीं। इस प्रकार अपने साथ वहां अंग्रेजों द्वारा किए गए भेदभाव ने उन्हें काफी विचलित कर दिया और उनके हृदय में अंग्रेजों के प्रति विद्रोह की ज्वाला भड़क उठी। गांधीजी ने सामाजिक रूप से सक्रिय होकर इन बुराइयों के विरुद्ध कार्य करना प्रारम्भ किया। वहां भारतीयों पर हो रहे अन्याय को देखते हुए उन्होंने अंग्रेजी साम्राज्य के समक्ष अपने देशवासियों के सम्मान तथा स्वयं अपनी स्थिति के लिए अनेक प्रश्न उठाये।

गांधी ने रंगभेद के विरुद्ध संघर्ष के लिए 1894 में नेटल इंडियन कांग्रेस की स्थापना की। एक वर्ष के कॉन्ट्रैक्ट के पश्चात् जब वे भारत लौटने की तैयारी कर रहे थे उसी समय नेटल लेजिसलेटिव असेम्बली ने भारतीयों को वोट देने के अधिकार से वंचित कर दिया।

उनके सहयोगियों ने भी उन्हें लेजिस्लेशन के विरुद्ध संघर्श जारी रखने के लिए आश्वस्त किया। इस प्रकार गांधीजी ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर के इस मुद्दे पर अपनी आवाज उठाई।

उन्होंने कुछ परिस्थितयों में ब्रिटिश सरकार का सहयोग भी किया था। उनका मानना था कि यदि भारतीय ब्रिटिश साम्राज्य में अपने मूलभूत नागरिक अधिकार चाहते हैं तो उन्हें अपने पहले कर्तव्यों को भी पूरा करना होगा। बोएर युद्ध (1899–1902) और जुलु रिबेलियन (1906) के दौरान ब्रिटिश सरकार के पक्ष में किए गए उनके प्रयासों के लिए ब्रिटिश सरकार ने उनकी अनुशंसा भी की थी।

महात्मा गांधीजी ने अपने जीवन का पहला असहयोग आंदोलन 1906 में दक्षिण अफ्रीका प्रवास के दौरान किया था, जिसे उन्होंने सत्याग्रह का नाम दिया था। ये असहयोग आंदोलन साउथ अफ्रीका के ट्रांसवाल गवर्नमेंट के द्वारा भारतीयों पर लगाई गई पाबंदियों जिनमे हिन्दू विवाह को मान्यता प्रदान नहीं करना भी शामिल था, के विरुद्ध किया था। लम्बे समय तक चले इस संघर्ष में सरकार ने गाँधीजी के साथ कई भारतीयों को जेल में डाल दिया था। किन्तु अत्यधिक दबाव के चलते साउथ अफ्रीका की सरकार को झुकना पड़ा तथा गांधीजी और जनरल जेन क्रिश्चियन स्मट के मध्य हुए समझौते को स्वीकार कर लिया गया जिसके अनुसार वहाँ हिन्दू विवाह को मान्यता मिली व भारतीयों के लिए पोल टैक्स को समाप्त किया गया। 1915 में गांधीजी में जब भारत वापस लौटे तब स्मट ने लिखा था *"संत ने हमारा साथ छोड़ दिया हैं, मैं हमेशा उनके लिए प्रार्थना करता हूँ।"*

भारत वापसी और भारतीय स्वाधीनता के लिए संघर्ष

गांधीजी 1915 में साउथ अफ्रीका से भारत वापस लौटे। और भारत की सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक स्थिति का उन्होंने गंभीरतापूर्वक अध्ययन किया। उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशनों पर अपने विचार व्यक्त किए। भारतीय राजनीति में उस समय गोपाल कृष्ण गोखले, बाल गंगाधर तिलक आदि का प्रभाव था। गांधीजी ने गोपाल कृष्ण गोखले को अपना राजनीतिक गुरु स्वीकार किया।

भारत वापस आने के बाद गांधीजी ने तीन प्रारंभिक आन्दोलनों का सञ्चालन करते हुए अपना नेतृत्व प्रदान किया। ये आंदोलन थे–

- 1917 में बिहार के चम्पारण में चलाया गया नील विरोधी किसान आंदोलन *(चम्पारण आंदोलन)*।
- 1918 में खेड़ा, गुजरात में चलाया गया लगान बंदी आंदोलन *(खेड़ा आंदोलन)*।
- 1918 में अहमदाबाद, गुजरात के श्रमिकों द्वारा मजदूरी के लिए मिल मालिकों के विरुद्ध चलाया गया आंदोलन *(अहमदाबाद आंदोलन)*।

इन आन्दोलनों ने गांधीजीं के अनुभव को समृद्ध करते हुए उन्हें भारतीय परिस्थितियों का पूर्ण ज्ञान कराया और भावी आंदोलनों की रणनीति बनाने के लिए आधार का कार्य किया। इसके पश्चात् गांधीजी ने देशव्यापी जनांदोलन, जिसको असहयोग आंदोलन के

नाम से जाना जाता है, प्रारम्भ किया।

असहयोग आंदोलन अंग्रेजों के अत्याचार के विरुद्ध 1920 में गांधी जी द्वारा प्रारम्भ किया गया एक सत्याग्रह आंदोलन था। यह ब्रिटिश हुकूमत द्वारा प्रस्तावित अन्यायपूर्ण कानूनों और कार्यों के विरोध में देशव्यापी अहिंसक आंदोलन था। इस आंदोलन में, यह स्पष्ट किया गया था कि स्वराज ही अंतिम उद्देश्य है। लोगों ने ब्रिटिश सामान खरीदने से इंकार कर दिया और दस्तकारी के सामान के उपयोग में लाने की बात स्वीकार स्वदेशी को प्रोत्साहित किया।

असहयोग आंदोलन पूर्णः गाँधी जी के नेतृत्व मे प्रारम्भ और संचालित किया जाने वाला यह प्रथम जन आंदोलन था जिसका का व्यापक जन आधार था। शहरी क्षेत्र मे मध्यम वर्ग तथा ग्रमीण क्षेत्र मे किसानो और आदिवासियो का इस आंदोलन को व्यापक समर्थन मिला। इसमे श्रमिक वर्ग की भी बराबर भागीदारी थी। इस प्रकार यह देश का प्रथम जन आंदोलन बन गया जिसमे समाज के सभी वर्गों की भागीदारी थी।

5 फरवरी 1922 में किसानों के एक समूह ने संयुक्त प्रांत के चौरी–चौरा नामक स्थान पर एक पुलिस स्टेशन पर आक्रमण कर उसमें आग लगा दी गई जिस कारण कई पुलिस वालों की जान चली गई। हिंसा की इस कार्यवाही से गाँधी जी बहुत क्षुब्ध हुए और बिना किसी परिणाम के उन्होंने असहयोग आंदोलन स्थगित करने की घोषणा कर दी।

महात्मा गांधी को 10 मार्च 1922 को गिरफ्तार कर लिए गया। उन पर राजद्रोह का मुकदमा चलाया गया जिसमें उन्हें छह वर्ष जेल की सजा सुना कर जेल भेज दिए गया। 18 मार्च, 1922 से लेकर उन्होंने केवल 2 वर्ष ही जैल में काटे थे कि फरवरी 1924 स्वास्थ्य कारणों से उन्हें रिहा कर दिया गया।

सविनय अवज्ञा आन्दोलन गांधी जी ने मार्च 1930 में नमक पर कर लगाए जाने के विरोध में नया सत्याग्रह चलाया। इसे डांडी मार्च, नमक मार्च, डांडी सत्याग्रह या सविनय अवज्ञा आन्दोलन के रूप में भी जाना जाता है। यह महात्मा गांधी के द्वारा अंग्रेज सरकार के नमक के ऊपर कर लगाने के कानून के विरुद्ध किया गया सविनय अवज्ञा कार्यक्रम था। गांधीजी ने डांडी मार्च अपने 78 अनुयायियों सहित साबरमती आश्रम, अहमदाबाद से 12 मार्च से प्रारम्भ की और 6 अप्रैल तक समुद्रतटीय गाँव दांडी तक लगभग 400 किलोमीटर (248 मील) की दूरी पैदल यात्रा करके नमक हाथ में लेकर नमक विरोधी कानून का भंग किया गया था।

यह आंदोलन पूरे एकवर्ष तक चला और 1931 में गांधी–इर्विन के बीच हुए समझौते से के पश्चात समाप्त हुआ। इसी आन्दोलन से सविनय अवज्ञा आंदोलन की शुरुआत हुई थी। इस आन्दोलन नें संपूर्ण देश में अंग्रेजो के खिलाफ व्यापक जनसंघर्ष को जन्म दिया।

भारत छोड़ो आन्दोलन यह आंदोलन गाँधी जी द्वारा द्वितीय विश्वयुद्ध के समय 8 अगस्त 1942 में प्रारम्भ किया गया था। इस आन्दोलन का उद्देश्य भारत से ब्रिटिश साम्राज्य

को समाप्त करना था। यह आंदोलन महात्मा गांधी द्वारा अखिल भारतीय कांग्रेस समिति के मुम्बई अधिवेशन में प्रारम्भ किया गया। यह भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान देश को अंग्रेजी शासन से स्वतंत्र कराने के लिये ब्रितानी हुकूमत के विरुद्ध एक राष्ट्रव्यापी सविनय अवज्ञा आन्दोलन था।

दलित सुधार आंदोलन

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दिनों में भारत की सामाजिक बुराइयों में छुआछूत एक प्रमुख बुराई थी जिसके विरूद्ध महात्मा गांधी और उनके अनुयायी संघर्षरत थे। गांधीजी समाज में व्याप्त छुआछूत की भावना से बहुत आहत थे। समाज मे दलितों की दशा सुधारने, उनको मानवीय सम्मान और गरिमा दिलाने के लिए भी उन्होंने बहुत प्रयास किया। 1932 में गांधी जी ने अखिल भारतीय छुआछूत विरोधी लीग की स्थापना की। गांधी जी ने अछूतों को हरिजन का नाम दिया। उन्होंने देश में 8 मई 1933 से छुआछूत विरोधी आंदोलन प्रारम्भ किया था और इस आंदोलन में सहायता करने के लिए आत्म शुद्धिकरण का 21 दिन तक चलने वाला उपवास व्रत किया ।

अस्पृश्यता को लेकर गांधीजी पर कई बार जानलेवा हमले भी हुए। एक बार जगन्नाथपुरी के मंदिर में प्रवेश करते समय उनकी गाडी पर हमला किया गया। पूना में गांधीजी की गाडी पर बम फेंका गया था, उनके प्राण बच गए। इन घटनाओं से भी वे अस्पृश्यता निवारण के अपने मार्ग से विचलित नहीं हुए।

बुनियादी शिक्षा की रूपरेखा

गांधीजी को सम्पूर्ण देश में एक शिक्षा शास्त्री के रूप में भी जाना जाता है। उन्होंने यह महसूस कर लिया था कि अंग्रेजों द्वारा प्रचलित शिक्षा व्यवस्था देश के लिए हितकारी नहीं है। यह केवल भारतीयों के अंग्रेजों का अनुगामी और कंपनी के क्लर्क के रूप में विकसित कर रही है। देश की आवश्यकता को पूरा करने के लिए यह शिक्षा व्यवस्था असफल है।

इस बात को ध्यान में रखते हुए गांधीजी ने देश की आवश्यकताओं को पूरा करने वाली भारतीय परिथितियों के अनुकूल, स्वावलम्बी और स्वाभिमानी बनाने वाली शिक्षा की वकालत करते हुए देश के समक्ष सात वर्षीय प्राथमिक शिक्षा की रूप रेखा प्रस्तुत की जिसे सम्पूर्ण देश में बुनियादी शिक्षा या बुनियादी तालीम के नाम से जाना जाता है।

बुनियादी शिक्षा दस्तकारी को आधार मानकर बनायीं गई एक स्वावलम्बी शिक्षा पद्धति थी जिसमे स्वदेशी और आत्मनिर्भरता की भावना को प्रोत्साहित करने पर बल दिया गया था। इस शिक्षा योजना के माध्यम से गांधीजी देश में व्याप्त हीनता, गरीबी और परतंत्रता की भावना को समाप्त करना चाहते थे।

गांधीजी की हत्या

देश की स्वतंत्रता के पश्चात् 30 जनवरी 1948 को जब वे दिल्ली के बिड़ला भवन

में रात के समय चहलकदमी कर रहे थे, नाथूराम गोडसे द्वारा इस महानायक की गोली मारकर हत्या कर दी गई। देश के राष्ट्रपिता का इस प्रकार क्रूर अंत हो गया।

उपसंहार

गांधीजी ने राष्ट्र व समाज से सम्बंधित सभी पक्षों पर अपने विचार प्रस्तुत किए। उन्होंने विचार प्रस्तुत करने के साथ ही उनको यथार्थरूप में उतारने के लिए सतत प्रयास भी किया। उन्होंने राष्ट्र से जुड़ी प्रत्येक समस्या को अपना स्वर दिया। देश के विकास के लिए कार्य योजनाएं प्रस्तुत की।

उनके लिए विश्व–व्यापी सम्मान और उनकी अनुयायियों की संख्या का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता हैं कि महात्मा गांधी की शव यात्रा 8 किलोमीटर लम्बी थी। उनके नाम पर विश्व के अनेक देशों में सड़कों, संस्थानों, मुहल्लों आदि के नाम रखे गए हैं। उनकी मूर्तियाँ विश्व के सभी प्रतिष्ठित देशों में स्थापित है। अपनी मृत्यु के एक दिन पहले वो कांग्रेस को समाप्त करने की सोच रहे थे।

महात्मा गांधी अपने पूरे जीवनकाल में प्रति दिन अठारह किलोमीटर पद यात्रा करते थे जो कि पूरी दुनिया के चक्कर 2 बार लगाने जितना हैं। महात्मा गांधी ने टॉलस्टॉय, आइन्स्टीन, हिटलर आदि जैसी प्रसिद्द हस्तियों से भी पत्र व्यवहार किया था। एक बार गांधीजी के विषय में लार्ड माउंटबेटेन ने कहा था *–महात्मा गांधी को इतिहास में महात्मा बुद्ध और ईसा मसीह का दर्जा प्राप्त होगा।*

गांधीजी के शांति और अहिंसा के सन्दर्भ में वैश्विक व्यक्तित्व का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि गांधीजी को अब तक 5 बार नोबेल प्राइज के लिए नामांकित किया जा चुका है, और समिति ने इस बात के लिए दुःख भी प्रकट किया हैं, कि उन्हें अभी तक इस सम्मान से नवाजा नहीं जा सका है।

सत्य, अहिंसा और अपरिग्रह को उन्होंने अपने जीवन का सिद्धांत बनाकर एक मानकीय जीवन आदर्श राष्ट्र के समक्ष प्रस्तुत किया। राष्ट्र ही नहीं वरन वे सम्पूर्ण विश्व के सर्वमान्य लोकप्रिय जननायक के रूप में जाने जाते हैं। गांधीजी सच्चे अर्थों में जनमानस के नायक, राष्ट्र नायक, महानायक, विश्वनायक और वैश्विक शांति के प्रतीक हैं।

SAMPLE

2

भारत में स्वदेशी आन्दोलन और महात्मा गाँधी

डॉ0 धीरज सिंह

SAMPLE

भूमिका

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की बलिवेदी पर भारत माँ के लाखों –करोड़ों सपूतों ने अपने प्राणों की आहुति देते हुए देश को स्वतंत्र करने हेतु प्राणपण अपने सांस की अंतिम डोर तक तत्पर रहे। अपना सर्वस्व लुटाकर और अनगिनत प्रताड़नाओं को सहते हुए भी देश के स्वाधीनता के दीवाने इस संघर्ष पथ से कभी विचलित नहीं हुए। आज देश को जो स्वतन्त्रता मिली है वो भारत माँ के लाखों–करोड़ों सपूतों की शहादत का ही परिणाम है। अंग्रेजों की सर्वशक्तिमान सत्ता से संघर्ष करना इतना सरल व साधारण नहीं जितना आज सुनने और लिखने में प्रतीत होता है।

भारतीय सपूतों द्वारा इस संग्राम हेतु अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ा जिसका उन्होंने साहस, धैर्य, बुद्धिमत्ता, कुशलता और निर्भीकता से सामना किया। अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष करते हुए इन सपूतों ने समय–समय पर अपने संघर्ष के तरीकों में आवश्यक बदलाव किए और अनेक नए तरीकों को शामिल करते हुए अपने संघर्ष पथ को और धार प्रदान की। इन्ही में से स्वदेशी स्वाधीनता सेनानियों का एक प्रमुख हथियार था। भारतीय स्वतंत्रता के दीवानों के लिए स्वदेशी अंग्रेजों से संघर्ष का मात्र एक प्रमुख हथियार ही नहीं था, यह तो भारत राष्ट्र की अस्मिता, अस्तित्व, गौरव और स्वाभिमान का प्रतीक था। स्वदेशी